

## वर्ड स्मिथ

## ऐसे बना पुलिस शब्द

“पुलिस” शब्द सिर्फ एक संस्था का नाम नहीं, बल्कि इतिहास, भाषा और समाज के विकास की एक रोचक यात्रा है। आज हम जिस पुलिस व्यवस्था को जानते हैं, उसकी जड़ें हजारों साल पुरानी सभ्यताओं और बदलती प्रशासनिक प्रणालियों में छिपी हैं।

शब्द “पुलिस” की उत्पत्ति लैटिन भाषा के “politia” से मानी जाती है, जिसका अर्थ है राज्य का प्रशासन या राजनीतिक व्यवस्था। यह शब्द आगे ग्रीक शब्द “polits” से जुड़ा है, जो नागरिक या शहर के सदस्य को दर्शाता है। समय के साथ यह फ्रांसीसी भाषा में “police” बना और फिर अंग्रेजी सहित दुनिया की कई भाषाओं में प्रचलित हो गया। प्राचीन काल में भी कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए व्यवस्थाएं मौजूद थीं। प्राचीन मिस्र, मेसोपोटामिया और यूनान जैसी सभ्यताओं में सुरक्षा और व्यवस्था के लिए संगठित प्रयास किए जाते थे। हालांकि उस समय यह जिम्मेदारी शासकों की सेना या स्थानीय प्रशासन पर ही निर्भर थी।

मध्यकाल में जैसे-जैसे शहरों का विस्तार हुआ, इंग्लैंड में “watchmen” और “constables” जैसे प्रारंभिक पुलिस तंत्र विकसित हुए। वहीं लुई XIV के शासनकाल में फ्रांस में औपचारिक पुलिस व्यवस्था स्थापित की गई, जिसने आधुनिक पुलिस की नींव रखी। आधुनिक पुलिस व्यवस्था का वास्तविक स्वरूप 19 वीं शताब्दी में सामने आया, जब 1829 में लंदन मेट्रोपोलिटन पुलिस की स्थापना हुई। औद्योगिक क्रांति और बढ़ते शहरीकरण के बीच यह कदम बेहद महत्वपूर्ण साबित हुआ। आज की संगठित और पेशेवर पुलिस व्यवस्था काफी हद तक इसी मॉडल से प्रेरित मानी जाती है।



## अमृत विचार

## कैम्पस



डॉ. शिवम भारद्वाज  
असिस्टेंट प्रोफेसर, मथुरा

“20,000 रुपये में सात दिन में ‘इंडेक्स्ड पेपर’ – यह अब किसी छिपे हुए नेटवर्क की नहीं, खुले बाजार की भाषा है। ईमेल, व्हाट्सएप और टेलीग्राम पर ऐसे प्रस्ताव आम हैं: तय शुल्क दीजिए, शोधपत्र तैयार, प्लेजरिज्म रिपोर्ट संलग्न और प्रकाशन सुनिश्चित। शोध अब सेवा बन चुका है। समस्या यह नहीं कि यह सब हो रहा है, समस्या यह है कि इसे अब असामान्य नहीं माना जाता। यहीं से संकट की असली शुरुआत होती है – सामाजिककरण का संकट। जब अनैतिकता अपवाद नहीं रह जाती, बल्कि व्यवहार का स्वीकृत हिस्सा बन जाती है, तो वह धीरे-धीरे संरचना में बदल जाती है। शोध के साथ आज यही हो रहा है। यह कुछ व्यक्तियों की चूक नहीं, बल्कि उस पूरे अकादमिक तंत्र का परिणाम है, जहां साधन और साध्य के बीच की रेखा मिटने लगी है।

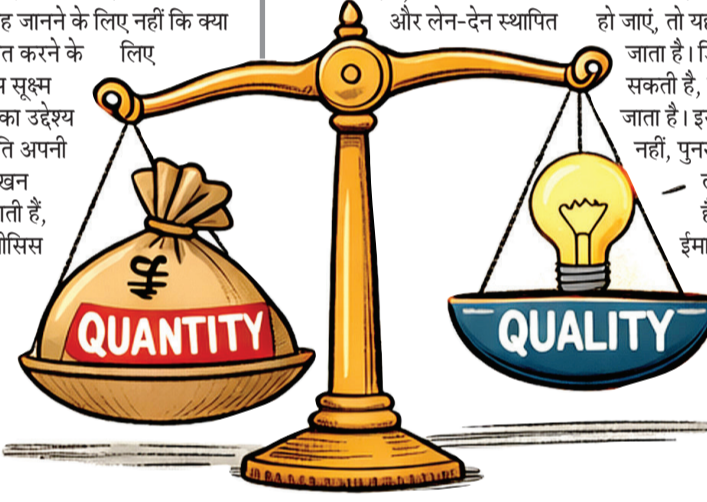
## शोध, साख और सौदेबाजी

## संरचना का क्षरण

भारत में उच्च शिक्षा का विस्तार अभूतपूर्व रहा है। विश्वविद्यालय, सीटें और शोधार्थी, सभी की संख्या बढ़ी है। पर इसी विस्तार के भीतर शोध का चरित्र भी बदल रहा है। अब दबाव केवल शोधार्थी पर नहीं, संस्थानों पर भी है। रैंकिंग, ग्रांट, स्थायीकरण और प्रतिष्ठा सब कुछ प्रकाशनों की संख्या से बंध गया है। परिणाम यह कि “कितना” अक्सर “क्या” को विस्थापित कर देता है। जब मूल्यांकन संख्या से होगा, तो व्यवहार भी संख्या के अनुसार ढलेगा। पारदर्शिता के लिए लाई गई व्यवस्थाएं, जैसे एपीआई, धीरे-धीरे मेट्रिक्स के ऐसे ढांचे में बदल गईं, जहां गणना ने गुण पर अधिकार जमा लिया। शोधपत्र ज्ञान-सृजन का माध्यम कम, मूल्यांकन की मुद्रा अधिक बन गए। यही मुद्रा नियुक्ति, पदोन्नति और वेतन-वृद्धि से जुड़कर शोध को बाधता में बदल देती है। जब शोध बाधता बनता है, तो जिज्ञासा पीछे हटती है, जो प्रक्रिया प्रश्नों से शुरू होकर अनिश्चितताओं से गुजरती है, वह लक्ष्य-पूर्ति का औपचारिक अभ्यास बन जाती है। ऐसे में शॉर्टकट अपवाद नहीं, अनिवार्य परिणाम होते हैं। संख्या बढ़ती है, पर अर्थ सिकुड़ता जाता है। इस दबाव का एक स्पष्ट रूप पीएचडी शोध में दिखाई देता है। कई संस्थानों में थ्रीसिस के साथ निश्चित संख्या में शोधपत्रों की अपेक्षा की जाती है। परिणामस्वरूप शोध का प्रश्न ही बदल जाता है – अब यह जानने के लिए नहीं कि क्या खोजा जाना चाहिए, बल्कि यह सुनिश्चित करने के लिए कि कितना प्रकाशित किया जा सके। इस सूक्ष्म परिवर्तन से शोध की दिशा ही नहीं, उसका उद्देश्य भी बदल जाता है। यहीं पेड-पेपर संस्कृति अपनी जड़ें जमाती है। एजेंसियां अब केवल लेखन नहीं करती, वे लेखक-पद उपलब्ध कराती हैं, प्रकाशन सुनिश्चित करती हैं और थ्री थ्रीसिस तक तैयार कर देती हैं। शोध-प्रस्ताव से निष्कर्ष तक सब कुछ आउटसोर्स किया जा सकता है। ऐसे में डिग्री ज्ञान का प्रमाण नहीं, प्रक्रिया-पूर्ति का प्रमाणपत्र बन जाती है। यह केवल व्यक्तिगत अनैतिकता नहीं, यह उस संरचना का क्षरण है, जिसने संख्या को गुणवत्ता से ऊपर स्थापित कर दिया है।

## केवल डिग्री प्रदाता न बनें विश्वविद्यालय

ऐसे समय में चीन जैसे कुछ देशों द्वारा शोध मूल्यांकन के मानकों में बदलाव संकेत देता है कि दिशा बदली जा सकती है। कुछ क्षेत्रों/विषयों में प्रकाशनों की संख्या से हटकर वास्तविक योगदान- चाहे वह समाधान हो, नवाचार हो या सामाजिक प्रभाव को महत्व देना एक प्रयास है, संतुलन बहाल करने का। यह कोई पूर्ण मॉडल नहीं, लेकिन यह स्वीकारोक्ति अवश्य है कि मेट्रिक्स पर्याप्त नहीं हैं। भारत के संदर्भ में यह प्रश्न और जटिल है। यहां मानविकी और सामाजिक विज्ञान की समृद्ध परंपरा है, जहां हर शोध किसी ठोस उत्पाद में परिणत नहीं होता, लेकिन प्रश्न वही बना रहता है क्या हम संख्या से आगे बढ़कर अर्थ को प्राथमिकता दे सकते हैं? नीतिगत सुधार आवश्यक हैं, पर पर्याप्त नहीं। मूल्यांकन व्यवस्थाओं में मौलिकता, गहराई और प्रासंगिकता को स्थान देना होगा। संस्थागत रैंकिंग में प्रभाव को गिनती से ऊपर रखना होगा, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन उस दृष्टिकोण में होना चाहिए, जो शोध को देखता है। क्योंकि अंततः संकट शोध का नहीं है, संकट उस तरीके का है, जिससे हम उसे मापते हैं। जब माप ही गलत हो, तो परिणाम भी विकृत होंगे। विश्वविद्यालय केवल डिग्री देने वाले संस्थान नहीं होते, वे समाज के आत्मचिंतन के स्थल होते हैं। यदि वहां सत्य की जगह मेट्रिक्स और लेन-देन स्थापित हो जाएं, तो यह आत्मचिंतन भी औपचारिकता बन जाता है। डिग्रियां बढ़ सकती हैं, रैंकिंग सुधर सकती है, लेकिन ज्ञान का आधार कमजोर हो जाता है। इसलिए, आवश्यकता केवल सुधार की नहीं, पुनर्स्थापन की है, उस मूल प्रश्न की ओर लौटने की, जिससे हर शोध शुरू होता है: हम क्यों खोज रहे हैं? यदि यह प्रश्न ईमानदारी से पूछा जाएगा, तो उत्तर हमें स्वयं उस दिशा में ले जाएगा, जहां शोध फिर से जिज्ञासा, गहराई और सत्य से जुड़ सके। क्योंकि अंततः शोध का संकट प्रकाशनों की अधिकता नहीं है – सत्य को कमी है और जहां सत्य कम पड़ने लगे, वहां साख टिकती नहीं, वह केवल दिखाई देती है, रहती नहीं।



जितनी लंबी, वैधता उतनी अधिक चाहे उसमें विचार की गहराई हो या न हो। इस प्रवृत्ति का मनोवैज्ञानिक पक्ष भी स्पष्ट है। जब सफलता का संकेत बार-बार मात्रा में दिया जाता है, तो व्यक्ति उसी दिशा में अपने प्रयास केंद्रित करता है। गहन, धीमा और अनिश्चित शोध कम आकर्षक हो जाता है, जबकि त्वरित और सुनिश्चित प्रकाशन अधिक व्यावहारिक विकल्प बन जाता है। इस प्रकार, अनैतिकता विचलन नहीं रह जाती, वह तंत्र के भीतर एक तार्किक अनुकूलन बन जाती है। यहां शोध के समय-काल का प्रश्न भी महत्वपूर्ण है। वास्तविक शोध धीमा होता है – वह संदेहों, असफलताओं और पुनर्विचारों से गुजरता है, लेकिन उच्च उसी प्रक्रिया को समयबद्ध लक्ष्यों में बांध दिया जाता है, तो उसकी प्रकृति बदल जाती है। “सात दिन में इंडेक्स्ड पेपर” केवल एक दावा नहीं, यह उस अधीरता का प्रतीक है, जिसने गहराई को गति से बदल दिया है। इसका प्रभाव केवल वर्तमान शोध तक सीमित नहीं रहता, यह ज्ञान की पूरी संरचना को प्रभावित करता है। जब संदिग्ध शोध संदर्भ बनते हैं, तो तुटियां आगे बढ़ती हैं। धीरे-धीरे समस्या व्यक्तिगत नहीं, प्रणालीगत हो जाती है, जहां सत्य और प्रमाण दोनों संदिग्ध होने लगते हैं।

## नोटिस बोर्ड

## बीएड प्रवेश परीक्षा की आवेदन तिथि बढ़ी

झांसी स्थित बुंदेलखंड विश्वविद्यालय के संयोजन में आयोजित राज्य बीएड प्रवेश परीक्षा के लिए ऑनलाइन आवेदन की अंतिम तिथि बढ़ा दी गई है। अब अभ्यर्थी 30 अप्रैल तक बिना विलंब शुल्क के आवेदन कर सकते हैं। शासन की मंजूरी के बाद यह फैसला लिया गया है। वहीं, इच्छुक उम्मीदवार 5 मई तक विलंब शुल्क के साथ भी आवेदन जमा कर सकेंगे। विश्वविद्यालय प्रशासन ने अधिक से अधिक अभ्यर्थियों से समय सीमा के भीतर आवेदन करने की अपील की है।

## रोजगार मेले का आयोजन

सुल्तानपुर के पयागीपुर स्थित जिला सेवायोजन कार्यालय (मॉडल करियर सेंटर) द्वारा 10 अप्रैल 2025 को राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान में रोजगार मेले का आयोजन किया जाएगा। इस मेले में टाटा मोटर्स सहित निजी क्षेत्र की कंपनियों भाग लेंगे, जहां 400 से अधिक पदों पर भर्ती की जाएगी। अभ्यर्थियों के लिए हाईस्कूल, इंटरमीडिएट व आईटीआई योग्यता अनिवार्य है तथा आयु 18 से 27 वर्ष निर्धारित की गई है। चयनित उम्मीदवारों को आकर्षक वेतन और सुविधाएं मिलेंगी। इच्छुक अभ्यर्थी आवश्यक दस्तावेजों के साथ मेले में शामिल हो सकते हैं।

## कॉलेज का पहला दिन

आज भी मेरी यादों में उतनी ही ताजगी के साथ बसा है, कॉलेज का पहला दिन। एक बीएससी छात्र के रूप में यह मेरे जीवन का नया अध्याय था, जिसमें उत्साह, जिज्ञासा और हल्की-सी घबराहट तीनों एक साथ मौजूद थे। स्कूल की सुरक्षित और परिचित दुनिया से निकलकर कॉलेज की खुली और विस्तृत दुनिया में कदम रखना मेरे लिए एक बड़ा बदलाव था।

उस दिन मैं सुबह काफी जल्दी उठ गया था। मन में कई तरह के विचार उमड़-धुमड़ रहे थे। कैसे लोग मिलेंगे, पढ़ाई कैसे होगी, क्या मैं खुद को वहां ढाल पाऊंगा या नहीं। मैंने बड़ी सावधानी से अपनी तैयारी की- नया बैग, साफ-सुथरे कपड़े, और मन में ढेर सारी उम्मीदें। जब मैं कॉलेज के गेट पर पहुंचा, तो सामने विशाल इमारत, इधर-उधर जाते छात्र-छात्राएं और अलग-अलग गतिविधियों का माहौल देखकर मैं कुछ पल के लिए ठिठक गया। क्लासरूम में

प्रवेश करना भी अपने आप में एक अनुभव था। वहां बैठे अधिकांश चेहरे मेरे लिए अनजान थे। मैं चुपचाप एक सीट पर जाकर बैठ गया। थोड़ी ही देर में फिजिक्स के प्रोफेसर आए और उन्होंने पढ़ाना शुरू किया। उनकी पढ़ाने की शैली स्कूल से काफी अलग थी। वे सिर्फ किताबों तक सीमित नहीं थे, बल्कि हर विषय को समझने और सोचने पर जोर दे रहे थे। उसी समय मुझे एहसास हुआ कि अब पढ़ाई का स्तर बदल चुका है और मुझे भी खुद को उसी अनुसार ढालना होगा।

धीरे-धीरे पास बैठे कुछ छात्रों से बातचीत शुरू हुई। पहले तो झिझक थी, लेकिन फिर परिचय का सिलसिला चल पड़ा। किसी का सपना वैज्ञानिक बनने का था, तो कोई आगे रिसर्च करना चाहता था। उनकी बातें सुनकर मुझे भी अपने लक्ष्य और स्पष्ट दिखाई देने लगे। दोपहर में हम सब कैटिन गए, जहां चाय और हल्की-फुल्की बातचीत ने हमें एक-दूसरे के करीब ला

दिया। कॉलेज का माहौल मुझे बहुत अलग लगा। यहां किसी पर कोई बंधन नहीं था, लेकिन साथ ही अपनी जिम्मेदारी खुद निभानी थी। क्लास में जाना है या नहीं, पढ़ाई कैसे करनी है – ये सब अब हमारे अपने निर्णय थे। यह स्वतंत्रता जितनी आकर्षक थी, उतनी ही चुनौतीपूर्ण भी।



दिया। कॉलेज का माहौल मुझे बहुत अलग लगा। यहां किसी पर कोई बंधन नहीं था, लेकिन साथ ही अपनी जिम्मेदारी खुद निभानी थी। क्लास में जाना है या नहीं, पढ़ाई कैसे करनी है – ये सब अब हमारे अपने निर्णय थे। यह स्वतंत्रता जितनी आकर्षक थी, उतनी ही चुनौतीपूर्ण भी।

## आज के दौर में करियर चुनते समय छात्र ऐसे विकल्पों की तलाश में रहते हैं, जिनमें न सिर्फ अच्छी सैलरी हो, बल्कि समाज के लिए कुछ करने का अवसर भी मिले। बायोमैडिकल इंजीनियरिंग ऐसा ही एक उभरता हुआ क्षेत्र है, जो इंजीनियरिंग और मेडिकल साइंस का बेहतरीन मेल है। हेल्थकेयर सेक्टर में तेजी से हो रहे बदलाव और नई तकनीकों के इस्तेमाल ने इस फील्ड को और भी महत्वपूर्ण बना दिया है। अगर आपकी रुचि तकनीक और चिकित्सा दोनों में है, तो यह क्षेत्र आपके लिए एक शानदार करियर विकल्प बन सकता है। आइए आपको विस्तार से बताते हैं—

आज के दौर में करियर चुनते समय छात्र ऐसे विकल्पों की तलाश में रहते हैं, जिनमें न सिर्फ अच्छी सैलरी हो, बल्कि समाज के लिए कुछ करने का अवसर भी मिले। बायोमैडिकल इंजीनियरिंग ऐसा ही एक उभरता हुआ क्षेत्र है, जो इंजीनियरिंग और मेडिकल साइंस का बेहतरीन मेल है। हेल्थकेयर सेक्टर में तेजी से हो रहे बदलाव और नई तकनीकों के इस्तेमाल ने इस फील्ड को और भी महत्वपूर्ण बना दिया है। अगर आपकी रुचि तकनीक और चिकित्सा दोनों में है, तो यह क्षेत्र आपके लिए एक शानदार करियर विकल्प बन सकता है। आइए आपको विस्तार से बताते हैं—

## बायोमैडिकल इंजीनियरिंग में बनाएं उज्ज्वल भविष्य

क्या है बायोमैडिकल इंजीनियरिंग- बायोमैडिकल इंजीनियरिंग एक ऐसा कोर्स और करियर फील्ड है, जिसमें इंजीनियरिंग के सिद्धांतों को मेडिकल साइंस के साथ जोड़कर काम किया जाता है। इस क्षेत्र में मेडिकल उपकरणों जैसे MRI मशीन, एक्स-रे, पेसमेकर, आर्टिफिशियल ऑर्गन्स आदि का डिजाइन, डेवलपमेंट और मटेनेंस किया जाता है। इस फील्ड से जुड़े प्रोफेशनल्स हॉस्पिटल, रिसर्च लैब, मेडिकल डिवाइस कंपनियों और हेल्थकेयर इंडस्ट्री में काम करते हैं। उनका मुख्य उद्देश्य बेहतर तकनीक के जरिए मरीजों की देखभाल को आसान



और प्रभावी बनाना होता है।  
क्यों बढ़ रही है डिमांड :  
हेल्थकेयर सेक्टर का तेजी से विकास- भारत सहित पूरी दुनिया में हेल्थकेयर इंडस्ट्री तेजी से आगे बढ़ रही है। नए अस्पताल, बेहतर सुविधाएं और आधुनिक उपकरणों की बढ़ती जरूरत के कारण इस क्षेत्र में कुशल बायोमैडिकल इंजीनियर्स की मांग लगातार बढ़ रही है।  
नई टेक्नोलॉजी का बढ़ता उपयोग- आज मेडिकल फील्ड में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), रोबोटिक्स और मशीन लर्निंग जैसी आधुनिक तकनीकों का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है। इन तकनीकों को समझने और लागू करने के लिए बायोमैडिकल इंजीनियर्स की भूमिका बेहद अहम हो गई है।  
रिसर्च और इनोवेशन के अवसर-

इस क्षेत्र में लगातार नई तकनीकों और उपकरणों पर रिसर्च की जाती है। बायोमैडिकल इंजीनियर्स को नए-नए इनोवेशन करने का मौका मिलता है, जिससे न केवल करियर ग्रोथ होती है बल्कि समाज को भी बड़ा लाभ मिलता है।  
सैलरी डिटेल्स- बायोमैडिकल इंजीनियरिंग करने के बाद शुरुआती सैलरी लगभग 3 से 6 लाख रुपये प्रतिवर्ष तक हो सकती है। अनुभव और कौशल बढ़ने के साथ यह सैलरी 10 लाख रुपये या उससे अधिक भी पहुंच सकती है। विदेशों में इस फील्ड के प्रोफेशनल्स को और भी बेहतर पैकेज और अवसर मिलते हैं।  
बायोमैडिकल इंजीनियरिंग आज के समय का एक फ्यूचर-रेडी करियर विकल्प है, जिसमें तकनीक और मानव सेवा दोनों का संगम देखने को मिलता है। अगर आप एक ऐसा करियर चाहते हैं, जिसमें नवाचार, सम्मान और बेहतर आय के अवसर हों, तो यह क्षेत्र आपके लिए बेहतरीन साबित हो सकता है।

## करंट अफेयर्स

- हाल ही में उत्तर प्रदेश की दिव्या सिंह ने एक असाधारण उपलब्धि हासिल की है। उन्होंने सिर्फ 14 दिनों में साइकिल चलाकर एवरेस्ट बेस कैम्प तक का सफर पूरा किया है। अपनी पूरी यात्रा के दौरान उन्हें जमा देने वाली टंड, ऑक्सीजन की कमी और मुश्किल रास्तों जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ा। यह महज एक उपलब्धि ही नहीं है, बल्कि पहाड़ों पर साइकिल चलाते समय दिव्या ने जिस दृढ़ता और हिम्मत का प्रदर्शन किया है, यह उसका भी एक जीता-जागता उदाहरण है।
- हाल ही में विश्व व्यापार संगठन (WTO) का 14 वां मंत्रिस्तरीय सम्मेलन (MC-14) 30 मार्च को कैमरून के याउंडे में संपन्न हुआ। यह सम्मेलन वैश्विक व्यापार जगत के नेताओं को एक मंच पर लाता है, जहां वे महत्वपूर्ण आर्थिक मुद्दों पर चर्चा करते हैं। भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व पीयूष गोयल ने किया और भारत ने WTO सुधारों, मत्स्य पालन सफाई, ई-कॉमर्स तथा कृषि से संबंधित चर्चाओं को दिशा देने में सक्रिय रूप से भाग लिया।
- बैत दिनों वरिष्ठ IAS अधिकारी नरेंद्र भूषण ने 6 अप्रैल, 2026 को भूमि संसाधन विभाग के सचिव का कार्यभार संभाल लिया है। यह विभाग ग्रामीण विकास मंत्रालय के अंतर्गत कार्य करता है। वे उत्तर प्रदेश फेडर के 1992 वेव के अधिकारी हैं और विभिन्न महत्वपूर्ण क्षेत्रों में तीन दशकों से अधिक का प्रशासनिक अनुभव रखते हैं।
- हाल ही में रॉयल चेलेंजर्स बेंगलोर और चेन्नई सुपर किंग्स के बीच हुए मुकाबले में भुवनेश्वर कुमार ने इतिहास रच दिया। वह इंडियन प्रीमियर लीग में 200 विकेट लेने वाले पहले तेज गेंदबाज बन गए। उन्होंने CSK के आयुष म्हात्रे को आउट करके यह उपलब्धि हासिल की।
- हाल ही में खेलो इंडिया ट्राइबल गैम्स 2026 (KITG) का पहला संस्करण संपन्न हुआ। टूर्नामेंट के समापन के साथ ही, कर्नाटक राज्य ने शीर्ष स्थान हासिल कर लिया है। उन्होंने कुल 23 स्वर्ण, 8 रजत और 7 कांस्य पदक जीते हैं। इस टूर्नामेंट ने पूरे देश से आदिवासी एथलीटों को एक मंच पर एकत्रित किया है और जमीनी स्तर के खेलों तथा समावेशिता को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है।

## जॉब अलर्ट

## पंजाब एंड सिंध बैंक

- पद का नाम - स्थानीय बैंक अधिकारी
- योग्यता - स्नातक
- पदों की संख्या - 1000
- आवेदन की अंतिम तिथि - 20-04-2026
- वेबसाइट - [ibpsreg.ibps.in](https://ibpsreg.ibps.in)

## भारतीय केंद्रीय बैंक

- पद का नाम - फेकल्टी मैबर व अन्य
- पदों की संख्या - 14
- वेतन - 12000 - 30000 रुपये प्रति माह
- योग्यता - स्नातक, स्नातकोत्तर, मैट्रिक पास
- आयु सीमा - पदनुसार
- आवेदन की अंतिम तिथि - 30 अप्रैल 2026
- नौकरी का प्रकार - अनुबंध

## इफको में प्रशिक्षु (लेखा) भर्ती

- पद नाम - प्रशिक्षु (लेखा)
- प्रशिक्षण अवधि - 1 वर्ष
- प्रशिक्षण के दौरान मासिक वजीरा - लगभग 48,000 रुपये प्रति माह, प्रशिक्षण के बाद वेतनमान - 40,000 रुपये - 75,000 रुपये (लगभग वार्षिक अनुमानित वेतन 12 लाख रुपये)
- योग्यता - सीए (इंटरमीडिएट) + यूजीसी से मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से स्नातक (न्यूनतम 60 प्रतिशत)
- आयु सीमा - अधिकतम 30 वर्ष
- वेबसाइट - [aavedan.iffco.coop/FMTRecruitment/](https://aavedan.iffco.coop/FMTRecruitment/)
- आवेदन की अंतिम तिथि - 15 अप्रैल 2026

## मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान इलाहाबाद

- पद नाम - अनुसंधान सहयोगी, कनिष्ठ अनुसंधान फेलो, परियोजना अधिकारी (प्रशासन)
- पदों की संख्या - 4
- वेतन - 37000 रुपये - 58000 रुपये प्रति माह
- योग्यता - पीएच.डी., एम.ई./एम.टेक./एम.आर्क./एम.सी.ए./एम.एससी, बी.एससी./बी.टेक./डिप्लोमा।
- आयु - 32-40 वर्ष
- आवेदन अंतिम तिथि - 14-04-2026
- नौकरी का प्रकार - अनुबंध

